गांधी गांधीवाद और गाधीवादी

जब भी समाज में कोई विचारक गंभीर विचार मंथन के बाद कुछ निष्कर्ष निकालता है तो वह निष्कर्ष समाज क प्रचलित मान्यताओं से कुछ भिन्न होता है यदि उक्त निष्कर्ष समाज क तात्कालिक समस्याओं के समाधान में निर्णायक परिणाम देता है। तो उक्त विचारक महापुरूष बन जाता है। उक्त महापूरूष के निष्कर्षो को सामान्य लोग बिना विचार किये ही स्वीकार करने लग जाते हिै। विचारक से महापुरूष बनने तक के बीच के कालखंड में विचारों को सामाज तक पहुचाने के लिये एक संगठन की आवश्यकता होती है। ऐसा संगठन उक्त विचारक के जीवन काल में भी बन सकता है और जीवन पश्चात भी। संगठन विचारों को समाज तक पहुचाने की व्यवस्था करता है और जब उक्त विचार सफल प्रमाणित हो जाता है। तब उक्त विचार को धीरे धीरे रूढ बनाकर उनपर कुन्डलो मारकर बैठ जाता है। इस तरह संगठन विचारों की कब्र होती है।संगठन क माध्यम से विचार सुरक्षित हो जाते है अदृष्य हो जाते है दीर्घकालिक हो जाते हे। अनुपयोगी हो जाते है। संगठन विचारों को पुनर्विचार से दुर कर देते है। तात्कालिक समस्याओं के समाधान के लिये जब कोई नया विचार सामने आता है तो उक्त संगठन के महापुरूष को आकमण झेलने पडे थें। प्रत्येक संगठन अपने महापुरूष के साथ किये गये दुर्ष्यवहार को अत्याचार घोषित करता है जबकि वह स्वयं भी आगे वाले विचारकों के साथ बिल्कुल वैसा ही अत्याचार करना शुरू कर देता है।

महात्मागांधी ने गुलाम भारत के स्वतंत्रता संग्राम को एक नई दिशा दी उन्होने इस संग्राम के लिये सत्य और अंहिंसा को मुख्य मार्ग घोषित किया विदेशी वस्तु वहिष्कार उनका सहायक मार्ग था। धार्मिक सामाजिक जातीय एकता उक्त संग्राम के उपमार्ग है चर्खा खादी और गांधी टोपी उक्त संग्राम की पहचान स्वरूप थें लक्ष्य सिर्फ एक था बिल्कुल स्पष्ट था और सर्वमान्य था राष्टीय स्वराज्य। स्वराज्य के लिये उन्होने मार्ग सहायक मार्ग उपमार्ग सहायक उपमार्ग आदि तय किये और तदनुसार ही वे इन मार्गों की उपयोगिता भी मानते थें। गांधी जी ने सत्य और अंहिसा से कभी समझौता नहीं किया क्योकि यह उनका मुख्य मार्ग था। चर्खा खादी गांधी टोपी से वे समझौते के लिये तैयार थे।यदि कोई व्यक्ति भिन्न वस्त्र टोपी या भिन्न संगठन वाला भी हो तो वे उसका बहिष्कार नहीं करते थें गांधी के आन्दोलन में सब प्रकार के लोग शामिल थे चाहे वे गांधी जी के बताये कुछ उप मार्गो से सहमत ही क्यो नहो गांधी जी ने अपने जीवन में किसी को अधुत नही माना क्योंकि उनके विचारों में अधुत कार्य होता है कर्ता नहीं उन्होने नारा दिया पाप से घृणा करो पापी से नहीं। गांधी जी ऐसे ऐसे वीमारों की भी सेवा करते थे जिनकी बीमारी ठीक करने का भरसक प्रयास किया।

गांधीजी के बाद उनके विचारों ने गांधीवाद का स्वरूप ग्रहण किया। गांधीवाद की एक सर्वमान्य परिभाषा थी तत्कालीन समस्याओं का सत्य और अंहिसा के मार्ग से समाधान का प्रयत्न। इसमें तत्कालीन समस्याओं का समाधान लक्ष्य था और सत्य अंहिंसा मार्ग। गांधी के बाद गांधीवाद विचारों से दुर होने लगा और धीरे धीरे विचारों से हटकर संस्कार बन गया। अब उसकी परिभाषा बदल गई सत्य और अहिंसा के आधार पर ही समस्याओं के समाधान का प्रयत्न सत्य और अंहिसा लक्ष्य बन गया समाधान गौण। समस्याओं की पहचान के लिये तात्कालिक परिस्थियों के साथ कोई तालमेल नही रहा गांधीवाद धीरे धीरे गांधी से दुर हो गया।

ऐसे अधिकांश संस्कार प्रधान गांधीवाद से प्रभावित से प्रभावित लोगों का समूह बन गांधीवादी संस्कर इसमें शामिल अधिकांश लोग बहुत त्यागी चरित्रवान पद और धन के प्रलोभन से दुर उच्च संस्कारवान है किन्तु उनमें विचार एवं चिन्तन शक्ति का सर्वथा अभाव है। वे समस्याओं का ठीक ठीक आकलन नहीं कर पातें। वे समस्याओं के समाधान के लिये अंहिंसा को शस्त्रके रू‍प में प्रयोग न करके अपने पलायन की ढाल के रूप में उपयोग करते है। वे विपरित विचार वालों से तर्क नहीं कर सकते। विचार मंथन इनके आचरण में दुर दुर तक नहीं है।

गांधी विपरीत विचार रखने वाले को अधूत नहीं मानते थें गांधीवादी उन्हें अधूत मानकर घृणा करते है। गांधी जी स्वयं को इतना दृढ मानते थे कि उन पर असत्य के प्रभावी होने का कोई भय नहीं था परिणाम स्वरूप से सबके बीच अपनी वात रखने का साहब करते थें। गांधीवादी इतने भयभीत है। कि वे दुसरों के विचारों से प्रभावित होने के डर से उनसे दूर भागते है। गांधी जी वैचारिक विस्तर क पक्षधर थे गांधीवाद संगठन की सुरक्षा में ही परेशान रहते है। गांधी ली इस्लाम के खतरे को भली भांति समझते हुए भी एक रणनीतियों के अन्तर्गत उनसे समझौता करते थे। गांधीवादी इस्लाम के खतरे को न समझते है न समझना चाहते है गांधी जी पूरी तरह धर्मनिरपेक्ष थे। वे साम्प्रदायिकता को कभी स्वीकार नह करते थे गांधीवादी धर्मरिपेक्षता का एक ही अर्थ समझते है। संघ का विरोध और मुस्लिम तुष्टीकरण। गांधी जी साम्यवाद को घातक विचार मानते थे गांधीवादी साम्यवाद को समझते ही नहीं। मुझे तो आश्चर्य होता है कि हिंसा

का सैद्धान्तिक रूप से भी और व्यावहारिक रूप से भी समर्थन करने वाले साम्यवादियों और आतंकवादी मुसलमानों के विरूद्ध गांधीवादियों का न कभी प्रत्यक्ष विरोध दर्ज होता है। न परोक्ष किन्तु यदि प्रशासन इनके विरूद्ध कोई कठोर कदम उठाता है तो गाधींवाद अवश्य ही विरोध मं हल्ला करना शुरू कर देते है। गांधी जी सरकरी कारण के बिल्कुल विरूद्ध थे और सामाजीकरण के पक्षधर थे गांधीवादी सामाजीकरण के पक्षधर थे गांधीवादी सामाजिकरण को समझते ही नहीं वे तो व्यापारीकरण के स्थान पर सरकारीकरण की वकलत तक करते है। गांधी जी निजीकरण के स्थान पर सामाजिकरण चाहते थे। गाधींवादी निजीकरण को विरोध तो करते थे। गांधीवादी सरकरी कारण को या तो समझते नहीं या उनके संस्कार उनकी समझदारी में बाधक है।

आज देश में ग्यारह समस्याएँ बढ रहीं है। भारत के सभी राजनितिक दल इस समस्याए के समाधान की अपेक्षा दस प्रकार के नाटकों में सलग्न है।इन राजनैतिक दलो की नीतियाँ तो गलत है ही नीयत भी गलत है। साम्यवादी भी अपनी राजनैतिक उदेश्यों की पूर्ति के लिये इनद स नाटकों को प्रोत्साहित करते रहते हैं। संघ परिवार की नीयत अर्ध राजनैतिक है। उसकी नीतियाँ साम्प्रदायिकता से भी प्रभावित है और पूँजीवाद से भी। परिणाम स्वरूप वे सात समस्याओं के तो समाधान को चिन्ता करते है किन्तु आर्थिक असमानता और श्रम शोषण पर नियंत्रण की वे कभी नहीं सोचतें। मिलावट की रोकथाम के विषय में भी वे चुप ही रहते है। क्योंकि मिलावाट और व्यापार का चोली दामन का संबंध बन गया है। सबसे दुखद है कि संघ परिवार साम्प्रदायिक के विषय में भी स्पष्ट नहीं है। उसके अनेक कार्य तो साम्प्रदायिकता को मजबुत करने मे ही सहायक होते है। गांधीवादीयों का वग्र ही एक ऐसी जमात है जो राजनीति से संबंध नहो रखती किन्तु हमारा दुभाग्र्य है कि इनकी नीयत ठीक होते हुए भी नीतियाँ देश की सभी ग्यारह समस्याओं के विस्तार में सहायक हो रही है। राजनीतिज्ञ जानबुझकर नाटक करते रहते हे और गांधी वादी अनजाने में उसके पात्र बन जाते हे मेरा यह आरोप अत्यन्त ही गभीर हे और हो सकता ह कि यह गलत ही हा किन्तु ब तक मैने जो समझा वह ऐसा ही है और यदि इस संबंध में कोई बहस छिडती है तो मैं उसका स्वागत ही करूँगा।

मैने गांधी को बहुत सुंना ओर समझा है। गांधीवाद को भी प्रयोग करके पूरी तरह सफल होता देखा है और गांधीवादीयों से भी खूब चर्चा की हे।गांधीवादी तर्क से बहुत भागते है वे स्वयं को अन्य लोगों से अधिक श्रेष्ठ और आचरणवान मानकर दुसरों से घृणा करते है किसी भी मामले मे अपनी बात कीी नही कहते बल्कि जो भी कहते है। उसमें गांधी विनोबा जयप्रकाश का नाम जोडे बिना न एक लाईन लिख सकते है। न बोल सकते हे।न भाषण दे सकते है। उन्होने गांधी विनोबा जयप्रकाश को कभी समझने का प्रयास किया हो तब तो वे उनकी बात को अपने शब्दों में वर्तमान स्थितियों के साथ जोडकर कह पातें। उन्हे तो सभी समस्याओं के समाधान के रूप में गांधी विनोबा जयप्रकाश के उस समय की परिस्थियों में कहे गये। शब्दों के आधार पर बने उनके संस्कार ही पर्याप्त दिखते है और यही आज की सबसे बडी समस्या है अधिकांश गांधीवादी इन बातों को समझते भी है और गुप्त रूप से चर्चा भी करते है। किन्तु संस्कारित गांधीवादी के समक्ष वैचारिक गांधीवादी हमेशा भयभीत रहते है।

मैं महसूस करता हूँ की स्वतंत्रता के बाद में जिन ग्यारह समस्याओं का विस्तार हुआ है उसका समाधन सिर्फ गांधीवाद के पास है। न तो इसका समाधान पूंजीवाद के पास है न ही साम्यवाद के पास ये दोनों ही या तो समस्याओं को बढा सकते है या उसके लाभ उठा सकते है । गांधीवाद ही इनके समाधान का मार्ग निकाल सकता है। और आज कि समस्याओं के समाधान के लिए निमित्त गांधीवाद को कोई गांधी ही परिभाषित कर सकता है। गांधीवादी नहीं। क्योंकि गांधी दाण्डी यात्रा समस्या के समाधान के लिये करते थे। और यह गांधी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए नकल करते है। गांधी जी के वस्त्र किसी पूर्व महापूरूष की नकल न होकर भारत के आम निवासियों के दुख दर्द की असल थें ये लोक नकल करके गांधी चश्मा,उनके कपउे और उनकी दाण्डी यात्रा करके गांधी बनना चाहते है। ये गांधीवाद को कभी समझा वह गांधीवाद को क्या समझेगा। इस लिए आज भारत को एक गांधी की जरूरत है एक ऐसे गांधी की जो अपना नाम गांधी रखे या काई और वह चाहे खादी पहने या कुछ और वह दाण्डी यात्रा करे या कोई और यात्रा करे यह महत्वपूर्ण नही महत्वपूर्ण यह है कि वह गांधी सत्य और अहिंसा का डण्डा ओर झण्डा उठाकर ग्यारह समस्याओं के समाधान के लिए निकल पडे और भारत की सभी हिंसक साम्प्रदायिक जातीय स्वार्थान्ध राजनैतिक शक्तियों को एकसाथ चुनैती देकर घोषणा करें। कि अब तक हमने बहुत सहा अब सहेगें नही हम चुप रहेंगे नहीं झंडा उठा लेगे हम।

मै जानता हूँ कि स्थापित संगठन ऐस विचारों को बरदास्त नही कर सकते यदि किसी गांधी ने आकर गाधीवाद को इस ढंग से परिभाषित किया ता उक्त विचारक गांधी को सबसे पहले टकराव संस्कारित गाधींवादियों का ही झोलना पडेगा और वह टकराव किसी

भी सीमा तक जा सकता है यदि गांधी ने इस संकारित गांधीवादियों को समझााकर कोई मार्ग निकाल लिया तब तो उसके जीते जी ग्यारह समस्याओं का समाधान का मार्ग निकल सकता हे अन्यथा उनका भी वही हाल होगा जो इशुमसीह का हुआ गांधी का हुआ और तब उनके बाद उनके नाम से एक नया संगठन नयावाद खडा होगा औंर दुनिया में वादों क एक नया वादा जुडकर वाद विवाद में सहायक बन जायगा।

पत्रोत्तर

श्री कुष्णदेव सिंह जी परियारा म.उ.उत्तर प्रदेश,

प्रश्न –1 ज्ञानतत्व अंक नवासी पृष्ठ दस के अनुसार आप एक सर्वोदयी मित्र की कोलाकोला संबंधी अनावश्यक जिद के समक्ष झुक गये। इस तरह आपके झुक जाने से आपकी कार्य प्रणाली के संबंध में समाज में क्या संदेश जायगा? हम इसका क्या अर्थ निकाले?

1. पृष्ठ ग्यारह के 1 में आपकी जिज्ञासा उचित नहीं क्योकि वर्तमान समय में कोई भी भारतीय कंपनी शीतल पेय नहीं बनाती है।
2. पृष्ठ पचासी पर आपने व्यवस्था परिवर्तन में राजनीति की भूमिका को बिल्कुल ही नकार दिया है।मै आपसे बिल्कुल असहमत हूँ।व्यवस्था परिवर्तन के लिये राजनीति से अलग कोई अन्य मार्ग है ही नहीं जयप्रकाश सहित अब तक हुए व्यवस्था परिवर्तन का एक भी ऐसा आन्दोलन नही हुआ जो राजनीतिक न रहा हो।
3. पृष्ठ पैंतीस पर आपने आपराधिक चरित्र संबधी चर्चा में मुसलमानों के प्रतिशत का हिन्दुओं के समक्ष मानकर भूल की है। सच्चाई यह है कि मुसलमान अन्यों की अपेक्षा अधिक अपराध करते है। इसी तरह आर्थिक समाजिक रूप से कमजोर लोग कम अपराध करते है। यह भी सोंच गलत है। अधिकांश दुर्दान्त अपराधी इसी पृष्ठभूमि के होते है।

उत्तर –आपका पत्र मिला आप हमारे चालीस उन लोगों की सूची में शामिल है जो पढने के साथ साथ लिखते भी है। धीरे धीरे ऐसे विद्धानों की संख्या बढने से मुझे विचार मंथन में सुविधा होती है। मैं इस निमित्त आप सबका आभारी हूँ।

1. एक सर्वोदयी मित्र की अनावश्यक जिद के समक्ष झुक जाने से आपको मेरे विषय में अर्थ निकालना चाहिए कि मै महत्वपूर्ण बातों को छोडकर अन्य व्यावहारिक बातों पर सामजस्य करना चाहता हूँ। बहुत से लोग बहुत छोटी छोटी बातों में विवाद करने लगते है। या अड जाते है किन्तु मेरी वैसी आदत नहीं यदि मेरी किसी वैसे मित्र से भेंट हो जावे तब भी मैं व्यर्थ का विवाद नहीं करता ।
2. कोई भारतीय कंम्पनी कोई शीतल पेय नही बनाती यह मुझे पता नहीं था। अच्छा किया जो आपने यह जानकारी दे दीं।
3. मेरे राजनीति परहेज और आपकी राजनीतिक सक्रियता के भावार्थ में कोई अन्तर नही है। आप जिसे राजनीतिक कह रहे है उसे ही मैं समाजनीति कह रहा हूँ। मेरे विचार मं ज्योंही राजनैतिक व्यवस्था विफल होती है औरा उक्त राजनैतिक व्यवस्था के स्थान पर जिस दूसरी राजनैतिक व्यवस्था की स्थापना होनी है वह कार्य राजनीति शास्त्र का न होकर समाजशास्त्र का हो जाता है यद्यपि परिवर्तन की प्रणाली भी राजनैतिक ही होती है औरा परिर्वतन का नारा दिया वह सिर्फ सत्ता परिवर्तन तक ही सीमित रहने से उसका स्वरूप राजनैतिक ही रहा।अत हमें इस विवाद में ज्यादा बहस में नही पडना चाहियें। कि व्यवस्था परिवर्तन का स्वरूप समाजिक होता है कि राजनैतिक। हमारा लक्ष्य व्यवस्था परिर्वतन है चाहे कोई उसे सामाजिक कहे अथवा राजनैतिक।
4. मेरी अपनी सोच यह है कि अपराधाों से धर्म का संबंध नहीं। इसी तरह मेरी सोच यह है कि सक्षम लोग अधिक अपराध करते है। और गरीब या अक्षम कम।यह अलग बात है कि सक्षम लोग कम पकडे जाते है और आश्रय लोग अधिक। यदि आपका निष्कार्ष इसके विपरीत है तो मैं आपसे सहमत नहीं।

2. स्वामी मुक्तानंदजी, सर्वोदय, आश्रय, साधुबेला हरिद्धार

ज्ञान तत्व मिला। ज्ञानतत्व में प्रश्नोत्तर की प्रकिृया बाधक है। मैं आपसे कभी प्रश्न नहीं करता किन्तु उत्तर देते है यह समझ में नही आता। मै तो सिर्फ अपने विचार देता हूँ जिन्हे आप प्रश्न समझ लेते है।

विकास कि वर्तमान परिभाषा समस्त मानव अधिकारों का हनन करती है। यह परिभाषा प्राकृतिक न्याय के भी विपरित है। संसार की सभी राजनैतिक शक्तियां इस परिभाषा का पोषण और संरक्षण करती है। धर्म इसको आर्शिवाद देता है। प्रचार तंत्र इसे जन–जन

तक पहुँचाता है। सेवातंत्र चार चांद लगाता है। अर्थ संग्रह की विकृति ने इसे जन्म दिया है। कानून बनाकर इस विकृति को कम करने का प्रयास यिा जा सकता है इस अर्थ विकृति को अपरिग्रह की सांस्कतिक ज्योति से निर्मूल किया जा सकता है।

आप जानते है कि मैने नब्बे क दशन मे संविधान संशोधन का व्यापक अभियान चलाया था। इस संबंध में मेरी पुस्तक चर्चा का विषय भी बनी थी। किन्तु अब मै उससे हटकर आर्थिक साम्राज्यवाद उन्मूलन प्रयास में लग गया है।
आप इस विचार पर गंभीरता से विचार करें।

समीक्षा— प्रश्नोत्तर के विषय में आपका कथन ठीक है। मुझ प्रश्नोत्तर शीर्षक नहीं देना चाहियें। था अब मैने प्रश्नोत्तर को बदलकर पत्रोत्तर कर दिया है। यह सच है कि आप जो विचार भेजते है उनमें मै शंका करता हूँ जिसे आप आगे पत्र में लिखते है। मंथन की यही प्रकिृया होती है। अत मैने भूल मानकर संशोधन कर दिया है।

मेरे विचार में समस्याओं का करण सिर्फ अर्थ संग्रह न होकर इससे साथ साथ राजनैतिक शत्कि संग्रह भी है। हमें राजनैतिक तथा आर्थिक दोनो शक्तियों के केन्दीयकरण पर समान चोट करनी होगीं। अब तक यह भूल हुई है कि आर्थिक साम्राज्यवाद पर चोट करने के लिए राजनैतिक साम्राज्वाद को प्रोत्साहित किया गया। परिणाम स्वरूप आर्थिक साम्राज्वाद पर तो चोट हुई नहीं राजनैतिक शत्कि अधिकांश संग्रह होती चली गई।अब हमें उक्त भूल को संशांधित करके दोनों पर एक साथ आकमण करना है। उपरिग्रह के विचार को मजबुत करने के लिए कानून सफल होगा यह मुझे नहीं जॅचता क्योंकि जिस देश मे कानून बनाने वालों की नीयत और नीतियों दोनों ही गलत हो वहां उन्हें और अधिकार देने की बात उचित नहीं होती। भारत की वर्तमान अनेक समस्याओं का कारण समाज का कमजोर हो कर राजनीति का लगातार मजबूत होना ह। आपने ही कई बार बताया है कि पुराने समय के सामाजिक जीवन को सोसाईटी एक्ट बनाकर तोडने का षडयंत्र हुआ था। और उस कानून ने हमारे जीवन को तहस नहस किया। मेंरे विचार में सामाजिक जीवन को तहस नहस करने वाला वह अकेला कानून नहीं है बल्कि अनेक कानून है। अत मेरा यह निष्कर्ष है कि कानून के माध्यम से सिर्फ अपराध नियंत्रण ही हो सकता है। यदि समाज निमार्ण के लिए कानुन का माध्यम बनाने का प्रयत्न हुए तो परिणाम वही होगे जो हो रहे है। मेरे विचार में जिन लोगों ने भी बाल विवाह दहेज प्रथा,छुआ–छुत, जातिप्रथा,महिला समानता आदि सामाजिक समस्याओं के समाधान के लिये कानून बनाने की वकालत की उनकी नीयत भल ही ठीक रही हो किन्तु नीतियां तो पुरी तरह गलत ही थी। इनकी ना समझी का ही परिणाम हुआ कि वकालत की उनकी नीयत भले ही ठीक रही हो किन्तु नीतियां तो पूरी तरह गलत ही थीं। इनकी ना समझी का ही परिणाम हुआ ि कइस सामाजिक समस्याओं पर तो आंशिक नियंत्रण हो पाया किन्तु भ्रष्टाचार साम्प्रदायिकता,जातीय कटुता,चरित्र,पतन हिंसा,आदि अनेक अधिक गंभीर समस्याएँ बढती चली गई अपरिग्रह के लिए भी कानूनी प्रयास का परिणाम घातक ही होगा।

संविधान संशोधन पर जब आप काम कर रहे थे।तब मैं इस विषय पर नही सोच पाया था। अब परिस्थितियाँ बदल गई है। उस समय संविधान संशोधन के पक्ष में वैसा वातावरण नही बन पाया था। इसलिए आपके प्रयत्न सफल नहीं हो सके। किन्तु कारण नहीं है कि जो कार्य गुरू ना कर पाये वह शिष्य भी नही कर सकेगा। आवश्यक है आपके मार्ग दर्शन की और वह मुझे आपके पुराने विचारों के रूप में उपलब्ध है। अत चिन्ता का कोई कारण नहीं है।

3.श्री रवीन्द्र सिंह तोमर,संवाद सरोवर ए.6विवेक कॉलोनी गुना म.प्र. 473001

ज्ञान तत्व मिलें। 1.मेरे विचार में संघ एक मातृ संस्था है जो भिन्न विचारों वाली संस्थओं और विचारधाराओ को मृत प्राय बनाने में सदा संलग्न रहती है। सघ इस उदेश्य की पूर्ति के लिए नित नये संगठन बनाता है। भाजपा भी ऐसे ही संगठनों मे से एक है। संघ की एक विशिष्ट कार्य प्रणाली है। वहॉ तर्क कि कोई गुनजाईस नही होती है बहस से बचना और दुसरों पर उगली उठाना इनका स्वभाव होता है।
2.आपके ज्ञानत्तव के किसी भी अंक में अर्थनीति पर चर्चा नही होती। आपका एक लेख अर्थनीति पर भी आना चाहिए। जिससे विचार मंथन का गति मिल सकें।

3. धनंजय को इस लिए फांसी हुई कि वह गरीब था। यदि वह गरीब नही होता तो वह फांसी से बच जाता। इसी तरह जाहिरा भी गरीबी के कारण ही बयान से पलट गई अन्यथा उसे भी अवश्य ही न्याय मिलता। मेरे विचार में धनंजय और जाहिरा को न्याय न मिलने का कारण उनकी गरीबी थी।

4. अभी अमेरीका ने गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्रमोदी का वीसा रद्द कर दिया। हिंसा के समर्थको ने अमेरिका के विरूद्ध स्वाभिमान रैली निकालने का प्रयत्न किया।आपका इस संबंध में क्या मत है?

5. भारत में गरीबों के शोषण के उदेश्य से उपभोक्ता संस्कृति का लागातार विस्तार किया जा रहा है।

उत्तर– आपका बारह पृष्ठो का पत्र मिला। बीस पचीस मृद्दों पर चर्चा थी। उनमें से पांच चुन कर मैने लिखा है। पूरे पत्र को पढकर यह स्पष्ट होता है कि आप संघ विरोधीं गुट की विचारधारा के संवाहक दिखते है। आपके प्रत्येक पत्र में संघ,मोदी ,गरीबी,उपभोक्ता संस्कृति अमेरिका की चर्चा तो होती है किन्तु कश्मीरी आंतकवाद,आंध्र का नक्सलवाद बिहार का जंगलराज आदि की चर्चा नहीं। मेरी इच्छा थी की किसी निश्चित विचारधारा के वकील बनने की अपेक्षा स्वतंत्र विचारधारा का अधिक महत्व भी है और आवश्यकता भी फिर भी मैं आपके पांच प्रश्नों पर अपनी सोच लिख रहा हूँ।

1.आपके संघ के जिस चरित्र और कार्यप्रणाली का वर्णन किया है वह सही है। मैं भी ऐसा ही मानता हूँ। किन्तु इसके साथ साथ मेरा अनुभव यह है कि साम्यवादी चरित्र कार्यप्रणाली भी ऐसी ही है। दोनों में कोई अन्तर नहीं है। आप वामपंथी कार्यप्रणाली की भी विवेचना करते तो अच्छा होता।

2.आपकी यह सोच पूरी तरह से गलत है। ज्ञानतत्व सरसठ तो पुरा का पुरा अंक ही आर्थिक समस्याएँ और समाधान शीर्षक से गया था। अनेक अंको में कर प्रणाली आर्थिक असमानता श्रम शोषण पर प्रश्नोत्तर होते है। ज्ञान तत्व के पिछले अंक में एक लेख श्रम के संबंध में गया है। मैंने उक्त लेख में यह निष्कर्ष निकाला है कि पूँजीवाद ने श्रम शोषण के लिए धन प्रधान संस्कृति का विकास किया और साम्यवाद ने श्रम शोषण के लिये बुद्धि प्रधान संस्कृति को आगे बढाया। श्रम शोषण के लिये चार बातों पर मुख्य जोर दिया जाता है।

1.कृत्रिम उर्जा मूल्य नियंत्रण 2. न्यूनतम श्रम मूल्य में शासकीय वृद्धि 3.शिक्षित बेरोजगारी उन्मूलन के प्रयास 4. जातिय आरक्षण। आपसे निवेदन है कि आप उसपर अपने विचार लिखें। मैनें कई बार अपने पाठाकों से पूछा है। कि भारत की साईकिल पर 250 रूपये कर लगा कर रसोई गैस को सबसीडी देने की वकालत करने में वामपंथी पीछे है न दक्षिपंथी। साम्यवादी और भाजपाई मिलकर यह नीति चलाते है मेरेइन प्रश्नों का उत्तर कुछ संघ समथ्रकों ने तो दिया कि यह बात उन्हे मालूम नहीं अथवा ऐसा होना गलत है। किन्तु किसी वामपंथी पाठक ने अब तक मेरे इस कथन पर एक शब्द भी नही लिखा। आपने भी नही। मैं जानना चाहता हूँ। कि श्रम शोषण सम्बधी मेरे आरोप अत्यन्त गंम्भीर किस्म के है।

वामपंथी पर कोई श्रमशोषण का अरोप लगावे तो तत्काल ही उसका उत्तर मिलना चाहिए किन्तु आर्थिक प्रश्नों के बदले में आप सबके पत्र मोदी और संघ परिवार तक आकर सिमट जाता है। तो मेरा दोष नही। मेरी इच्छा है कि आपलोग श्रमशोषण पर बहस आगे बढाईये तो मुझे बहुत खुशी होगी।

3. आपने लिखा कि धनंजय को फांसी इसलिए हुई कि वह गरीब था।यदि गरीबी के कारण उसके साथ अन्याय हुआ है तो भारत मे पचास करोड गरीब लोग निवास करते है। फिर उन पचास करोड को फांसी क्यों नही हुई। धनंज्य यदि गरीब था तो समाज को न्याय मिला और धनंजय को फांसी हुई। यदि पूंजीपति होता तो वह छुट जाता और समाज के साथ अन्याय होता। विचाराणीय प्रश्न यह है। कि पूंजी के बल पर कोई अपराधी फांसी से बच न सके यह प्रयास किया जाये न कि यह कि गरीब अपराध करें तो फांसी से बच जावे। मेरे विचार में आपकी सोंच न्याय के पक्ष में प्रयत्न के विपरीत समान अन्याय के पक्ष में है।अर्थात चूँकि पूँजीवाद बलात्कार करके भी फांसी से बच जाते है अत गरीब बलात्कारी को भी फांसी न हो। समाज को गरीब और अमीर जैसे वर्गो में बाटने की अपेक्षा सामाजिक और समाज विरोधी शोषण और शोषित कानून व्यवस्था का पालन करने वाले और कानून व्यवस्था तोडने वाले जैसे वर्गो में बांटना अधिक अच्छा है।

4.अभी अमेरीका ने गुंजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी को अमेरिका प्रवेश की अनुमति देने से इन्कार कर दिया। इसके साथ ही अभी हमारे लोकसभा अध्यक्ष सोमनाथ चटर्जी को भी जांच संबंधी नियमों में ढील न देने के कारण अपनी यात्रा रद्द करनी पडीं। दोनों प्रकरण यद्यपि भिन्न प्रकृति के है। किन्तु परिणाम दोनों के एक समान है। कि पश्चिमी देश हमारे देश के जन प्रतिनिधि को अपने देश

में नियमों से हटकर छुट देने हेतु सहमन नंहीं। विदेशी व्यवहार पर मोदी भी चिल्ला रहे है और सामनाथ जी भी। मेरे विचार में यह अमेरिका का अपना व्यवहार है। इस तदनुसार व्यवहार के लिए स्वतंत्रत है किन्तु इसमें चिल्लाने या विरोध प्रकट करने का तो कोई आधार नहीं।हमारी चिल्लाहट,झुंझलाहट या विरोध ही यह प्रमाणित करता हे कि हम वहाँ जाने के लिए अधिक लालायित है। और वे हमें बुलाने में खास रूचि नहीं रखते है। मुझे तो इस चिल्लाहट में अपने लोगों की बेशर्मी ही दिखती है कि आमंत्रण देने वाला हम पर शर्त थोपे और हम उसके लिए हल्ला करे। मेरे विचार में नरेन्द्र मोदी और सोमनाथ जी को झुझलाने की अपेक्षा शालीनता पूर्वक जाने स इन्कार कर देना चाहिए था किन्तु ये लोग अमेरिका आदि देशों में जाने के लिए लालायित रहते है। बाधा आने पर राष्ट्रिय अपमान की दुहाई देना शुरू कर देते है।

4.वर्तमान समय में जो दो संघ समर्थक और संघ विरोधी गुट बने हुए वे नये नये नाम और नई–नई संस्कृति पैदा करते है। उपभोक्ता संस्कृति भी एक ऐसा ही शब्द है जो इतना निर्गुण ओर गंभीर अर्थ वाला है। कि मेरी समझ से बाहर है। दोनों ही गुट भौतिक विकास कि लिये निरंतर प्रयत्नशील रहते है और अर्थ प्रधान संस्कृति को दिन रात गाली भी देते रहते है। जब आप भौतिक विकास को ही विकास कहेगे समाज को गरीब और अमीर वर्गो में बांटकर समस्याओं का समाधान करेंगें। तथा योग्यता का मापदण्ड धन मान कर चलेगें तो संस्कृति को अर्थ प्रधान होने से कैसे रोक सकते है। मैं नही समझ सका कि उपभोक्ताओं को वस्तुएँ उचित मूल्य पर मिलें। उपभोक्ताओं को न्याय मिले जैसे आन्दोलनों में सकिय लोग भी उपभोक्तावाद का रोना क्यों रोना शुरू कर देते है। मेरा आपस निवेदन है कि समाज को अनावश्यक वर्गो में बाटंने की अपेक्षा प्रवृति के आधार पर बंटने का मार्ग प्रशस्त करें। यदि श्रम की मांग बटेगी तो उपभोक्ता संस्कृति कोई स्मस्या नही रहेगीं। अनावश्यक प्रयत्न बंद करके सिर्फ एक प्रयत्न करें कि सत्ता और अर्थ का विकेन्द्रीयकरण हो इतना ही प्रयत्न पर्याप्त होगा।

6. श्री जय किशन धनवाद झारखंड

आप धर्म के विषय में जितना विचार रख रहे है। उतना ही स्पष्ट आर्थिक मामलों में भी रखने की आवश्यकता है। किन्तु आप आर्थिक मामलों में भी रखने की आवश्यकता है। किन्तु आप आर्थिक मामलों में कुछ दबी चर्चा रखते है। आज सरकारीकरण सारी आर्थिक समस्याओं की जड है इसे स्वार्थी तत्वों ने छदम नाम देकर राष्ट्रीयकारण कहना शुरू कर दिया है। मैं चाहता हुँ िकइस मुदे पर भी खुली बहस आयोजित हो।

उत्तर–– यह सच है कि अर्थनीति पर ज्ञानतत्व में चर्चा कम होती है। इसमें मेरी गल्ती नहीं है सामान्य लोग तो अर्थ नीति पर कोई प्रश्न नही करते और विशेष लोग तर्क विर्तक से दूर भागते है। अर्थनीति में दो ही मार्ग अब तक दिखाई देते हे। सरकारीकरण और व्यापारीकरण। दोना के अपने अपने पृथक पृथक गुण दोष है तीसरा मार्ग स्थानीय करण या सामाजीकरण हो सकता है। जिसपर और गंभीर विचार की आवश्यकता है। पंन्द्रह वर्ष पूर्व सरकारें सरकारीकरण की पक्षधर थी और समाज सरकारीकरण से मुक्ति के पक्ष में। अब सरकारें सरकारीकरण को हटाकर व्यापारीकरण के पक्ष में हो गई है। वामपंथी संगठन पूरी तरह व्यापारीकरण के पक्ष में।अब सरकारें सरकारीकरण को हटाकर व्यापारिकरण के पक्ष में हो गई। वामपंथी संगठन पूरी तरह व्यापारीकरण के विरूद्ध है और सरकारी करण के पक्षधर है। दक्षिपंथी दल कैसी अर्थनीति चाहते है। यह उन्हें खुद पता नही।स्वदेशी के नाम पर कुछ भी लिखना बोलना उनका स्वभाव है। समाज भ्रमित है। अम्बिकापूर आप आये थे। सरकारीकरण के विरूद्ध स्पष्ट विचार रखने वाले पूरे सम्मेलन में आप अकेले थे। अन्य सारे ही लोग इस संबंध में अस्पष्ट थे। मेंरे समक्ष यही संकट है। वामपंथियों के पास अभी असत्य थे। मेरे समक्ष यही संकट है। वामपंथियों के पास अभी असत्य को एक हजार बार बोलकर और लिखकर सत्य प्रमाणित करने लायक संगठन है। साहित्य के क्षेत्र में उनकी मजबूर लाबी बनी हुई है। दक्षिण पंथी धार्मिक सामाजिक मामलों में तो वामपंथियों के मुकाबले सक्षमह ै। ये लोग भी असत्य को तीन चार सौ बार बोलकर और लिखकर सत्य बना देते हे आर्थिक मामलों में दक्षिणपंथी प्रचार में अभी कमजोर है। हमारे पास अभी इतनी भी ताकत नहीं कि हम सत्य को दो बार भी बोलकर और लिखकर असत्य को चुनाती दे सके। यही संकट है। किन्तु यह संकट दुर हो रहा है। आप कुछ सकिय हो पाते तो आर्थिक चर्चा आगे बढ पाती। आर्थिक मामलों में आप ज्ञानतत्व के लिये तथा ज्ञान तत्व के विचारों पर टिप्पणी करना शुरू करिये तो मेरा चिन्तन पक्ष कुछ मजबुत होगा।

7 श्री रोहिताश खनगवाल 369/2 देवीनगर गोहाना,सोनीपत,हरियाणा, 131301,

ज्ञान तत्व अंक नवासी पृष्ट पैंतीस से उन्चालीस के बीच आपने जातीय आरक्षण के बिलकुल अनावश्यक माना है आपने यह तो मान है कि समाज में जिन जाति और वर्ग की सामाजिक आर्थीक स्थिति मजबुत होती है। वे अधिक अपरध करते है किन्तु आप आगे लिखते लिखते फिसज गये। जब सामाजिक आर्थिक दृष्टि से मजबुर जातियां अधिक अपराध करती हे तेा स्वाभाविक निष्कर्ष है कि सवर्ण जातियां अधिक करती है। प्रत्यक्ष दिखता है कि यदि दलित पुरूष सवर्ण स्त्री से संबध बनाये तो दण्डित पीडित और विपरीत हो तो सवर्ण पुरूष सम्मानित या क्षम्य हो जाता है। दो तरह के व्यवहारों का सिर्फ एक ही आधार होता है। दो तरह के व्यवहारों का सिर्फ एक ही आधार होता है। उचाँ या दलित जातिं। जातीय आरक्षण तो कुछ वर्ष पूर्व भारतीय संविधान ने लागू किया है। किन्तु ब्राहमणों ने तो स्वयं को श्रेष्ठ घोषित कर दिया और हजारों वर्षो से अपनी इस दूषित व्यवस्था का लाभ उठा रहे है। आपके विचार में स्वतंत्रता के समय दलित नेताओं ने जल्दबाजी में आरक्षण की व्यवस्था कराई। आपका यह कथन गलत है। उस समय दलिता के साथ जैसा अमानवीय व्यवहार होता था वह हदय विदारक था। स्वामी दयानन्द ने जब ऐसे अत्याचारों के विरूद्ध आवाज उठाई तो आठ प्रतिशत ही आदिवासी दलित उपर उठ सके है। एक सर्वोक्षण के अनुसार अगले पचास वर्षो में इन आठ प्रतिशत की संख्या बढकर दस हो सकती है किन्तु दस से उपर होने के काई लक्षण नहीं है।

एक सम्मानित व्यक्ति बिमार थां। परिवार के ही एक चालाक सदस्य ने उक्त बीमारी को दान पुण्य की सलाह दी उस चालक ने दान पुण्य के नाम पर ऐसा नाटक खडा किया कि परिवार के अन्य लोग हतप्रभ भी थे और चुप भी। यदि कोई कहता कि बीमार का इलाज कराना चाहिए तो वह व्यक्ति उक्त बीमारी की बीमारी की ऐसी मनोदशा का वर्णन करता कि सब चुप हो जातें। धीरे धीरे उक्त चालाक व्यक्ति ने नगर के एक पण्डित के साथ षडयंत्र करके सारा घर खाली कर दिया और परिवार के सभी सदस्य हाथ मलते रह गये।

स्माज में दलित आदिवासी शोषित रहं है। उनके साथ अत्याचार हुआ है। ये दोनों बातें सच भी है। और स्वीकार्य भी। आप इस संबंध में चाहे जितना विष्तृत और नाटकीय प्रस्तुति करें वह आवश्यक नहीं क्योंकि वह मान्य हैं।जिस प्रश्न पर विचार मंथन होना है वह यह है कि दलितों आदिवासीयों का अधिक लाभ श्रम मूल्य वृद्धि में हे या आरक्षण में दलित आदिवासीयों का नब्बे प्रतिशत श्रमजीवी है और दस प्रतिशत बुद्धिजीवीं। सवर्णो का नब्बे प्रतिशत बुद्धिजीवी है और दस प्रतिशत श्रमजीवी। दस प्रतिशत दलित आदिवासी बुद्धिजीवी ने अपने व्यक्तिगत स्वार्थ के लिये बुद्धि जीवी कार्यो में अपना आरक्षण करा लिया और स्वार्थ के लिये बुद्धि जीवी कार्यो में अपना आरक्षण करा लिया और सवर्ण बुद्धिजीवियों के साथ मिलकर अधिक से अधिक सुविधाएँ बटोरने लगे। स्वतंत्रता के समय सरकारी कर्मचारियों के वेतन भत्ते श्रमिको के श्रय मूल्य की अपेक्षा इतने अधिक नही थे जितन आज है। मंत्रियों की सुख सुविधा का भी यही हाल है। इन सरकारी कर्मचारियों और मंत्री विधायकों को अपने वेतन भत्ते से अधिक आय अन्य साधनों से भी होती है जबकि श्रमिकों को उनके श्रममूल्य स भी बहुत कम मिल पाता है। इन बुद्धिजीवियों ने श्रमजीवियों को धोखा देने के लिये नकली श्रममूल्य घाषित किया हुआ है जबकि मिलता उससे बहुत कम है। यदि सन सैंतालीस में ही बुद्धिजीवी दलित आदिवासी और बुद्धिजीवी सवर्णो को इस योजना को ठीक से समझा गया होता तो जातीय आरक्षरण के स्थान पर श्रम मूल्य बुद्धि की योजना पर काम शुरू होता तब आज यह हालत नहीं होती।

आप विचार करिये कि यदि सरकारी कमचारियों के वेतन भत्ते बढते है तो कोई विराध नहीं होता मंत्री विधायक मनमानी सुविधाएँ इकठी कर रहे है तो कोई हल्ला नहीं होता लेकिन यदि इन कर्मचारियों के वेतन भत्तों में काई कटौती हो तो सारा बुद्धि जीवी भारत आसमान सर पर उठा लेता है। क्यों? की क्या ये लोग श्रमजीवियों की अपेक्षा कुछ अधिक मानवीय है क्या इन दलित आदिवासीयों के पूर्वजो ने अन्य श्रमजीवी दलित आदिवासियों के पूर्वजों से अधिक कष्ट और अपमान सहे थे?शायद नहीं फिर ये आठ प्रतिशत लोग शेष दलित आदिवासियों के अपमान अत्याचार का लाभ उठाकर नाटक कर रहे है। मैं तो किसी भी प्रकार के आरक्षण को समस्या का समाधान नहीं मानता। आरक्षाण जितना समाधान करता है उससे कई गुना अधिक समस्साएँ पैदा करता है। फिर भी यदि आरक्षण ही करना है तो इन रोजगार धंधो को पूरी तरह श्रम आरक्षित कर दीजियें जो हाथ से किये जा सकते है। पूरी तरह मशीने के ऐसे प्रवेश को रोक दीजिये कि श्रम की मांग बढेगी। श्रम का मूल्य बढेगा और नब्बे प्रतिशत श्रमजीवी दलित आदिवासीयों के जीवन में बहुत परिर्वतन आ जायगा। ऐसा करके जातीय आरक्षण समाप्त कर दीजिये। मैं जनता हूँ कि वर्तमान आरक्षण का लाभ उठा रहे बुद्धिजीवी भी। सवर्ण बुद्धिजीवी आरक्षण समाप्त करना तो चाहेगें पर बुद्धि का मूल्य घटाकर श्रम मूल्यबुद्धि का वे विरोध करेगे। दलित आदिवासी आरक्षरण समाप्ति का भी विरोध करेगें और बुद्धि का मुल्य घटाकर श्रम मूल्यबुद्धि का वे विरोध करेगें। दलित आदिवासी आरक्षण समाप्ति का भी विरोध करेंगे

और बुद्धि का मूल्य घटाने का भी। श्री खनगवाल जी भी श्रम जीवी होते तो आरक्षण की इतनी वकालत नहीं करते जितनी कर रहे है। मेरा निवेदन है कि समस्या से लाभ उठाने की अपेक्षा समाधान के प्रयत्न अधिक आवश्यक है।

श्री महावीर सिंह जी पूर्व पुलिस उप अधीक्षक फैजपूर निनावा बागपत उत्तर प्रदेश।

आपके विषय में कुछ सूनसूनकर एक कल्पना की तस्वीर उभरती थी किन्तु मेरे ग्राहक बनते ही आपने ज्ञानतत्व के चार पांच अंक एक साथ भेज दिये ।पढने पर तस्वीर साफ दिखने लगी है। मेरी पृष्ठभूमि सर्वोदय और आर्यसमाज से जुडी रही है। मैं स्वामीदयानन्द और महात्मा गांधी के विचारों से प्रभावित रहा। आपने ज्ञानतत्व के अंको में अनेक गंभीर विषयों पर अपने विचारों प्रस्तुत किये किन्तु गांधी विनोबा और जयप्रकाश का तुलनात्मक विश्लेषण एक कठिन कर्य तथा जिसे अपने सरल शब्दों में अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया मैं तो समझता हूँ।कि सर्वोदय कर्यकर्ता इतनी गहराई तक विचार मंथन नहीं करते। यही कारण है कि सर्वोदय आग बढ नहीं पा रहा है।

आपने रामानुजगंज में जो शासन मुक्त व्यवस्था का सफल प्रयोग किया वह भी प्रशंसनीय है आपने ग्यारह समस्याएँ बहुत ठीक ढग से समझी है। तथा राजनीति पर अंकुश हेतु जो तीन सूत्र तय किये उनसे मैं सहमत हूँ।

किन्तु मैं यह नहीं समझ पा रहा कि शासन मुक्त समाज में शोषण मुक्ति कैसे संभव है जब तक वर्तमान पूँजीवाद नव साम्राज्यवादी व्यवस्था नहीं बदलेगी तब तक वैश्वीकरण उदारीकरण निजीकरण सम्पूर्ण अर्थ व्यवस्था को पंगु बनाते रहेंगें। गांधी जी ने स्वदेशी के आधार पर विदेशी कम्पनी से टक्कर ली थी अब तो विदेशी कम्पनियों की बाढ सी आ गई है। आप प्रत्येक विषय पर गंभीर चिन्तन करते है। और बेहिचक टिप्पणी करते है। इस विषय पर गंभीर चिन्तन करते है। इस विषय पर भी आपके विचारों की प्रतिक्षा। मेरे विचार में गांधीजी श्रम प्रधान जीवन पद्धति शोषण मुक्ति का आधार मानते रहे और श्रम प्रधान जीवन पद्धति के लिये कृषि आधारित रोजगार हो मुख्य श्रोत बन सकता है। किन्तु वर्तमान व्यवस्था न कृषि आधारित रोजगार को प्रक्षय दे रही है न ही श्रम प्रधान जीवन पद्धति को। वह तो सिर्फ बुद्धि को और धन को महत्व दे रही है जिसका आधार है। कल कारखाने परिणाम हमारे सामने स्पष्ट है। यह कल कारखाना संस्कृति सम्पूण भारत की नस नस में इस तरह प्रवाहित की जा रही है कि आपका संविधान संशोधन अभियान कठिन दिखता है। फिर भी हमें निराश नहीं होना चाहिए अपनी अल्प क्षमता आपके सहयोग में समर्पित है।

उत्तर – आपने अपने मन की बात बहुत स्पष्ट और निश्चल मन से रखी है। अपराध और शोषण के फर्क को समझने की आवश्यकता है। अपराध की अनिवार्य शर्त होती है बलप्रयोग अथवा दुराब छिपाव शोषण में न बलप्रयोग होता है न दुराव छिपाव। शोषण शोषक द्धारा शोषित की सहमति से उसकी मजबूरी का लाभ उठाकर किया जाता है। शोषण अनैतिक होता ह,अपराध नही शोषण समाजिक समस्या है कानूनी नहीं। शोषण न कभी कानून से रोका गया है न रोकना संभव है। जब भी शोषण रोकने में शासन ने पहल कीं पहला प्रयास मकान किराया कानून के रूप में सामने आया कुछ मकान मालिक किरायेदारों का शोषण करते थें। शासन ने कानून बनाया। अब किरायेदार मकान मकान मालिकों को शोषण करने लगे। अपराधों में बेतहाशा वृद्धि हुई। आम नागरिक के चरित्र में गिरावट आई। वर्तमान में महिला शोषण की रोकथाम हेतु शासन ने दहेज कानून बनाया दुष्परिणाम दिखने लगें है। मैने अपने जिले में एक सर्वेक्षण किया तो चौंकाने वाले तथ्य प्रकट हुए कि दहेज हत्या के आरोप में न्यायालय से सजा पा चुके आधे प्रकरण या तो झूठे थे। या अतिरंजित। विवाह के बाद होने वाले किसी भी विवाद में कन्या परिवार के अनेक लोग वर पक्ष के साथ सम्पूर्ण समाज भी दहेज हत्या मानकार हत्या प्रमाणित करने में जूट जाता है। अच्छे अच्छे विद्वान और ईमानदार न्यायाधीश भी ऐसे प्रकरणों में भावना में बहकर सत्य का गला घोट देते है और वर पक्ष को किसी न किसी रूप में सजा देना न्याय और सामाजिक कार्य मानते है। दलित आदिवासी शोषण करने के लिए कुछ कानून बने है। आदिवासियों में उपस्थित धूर्तों के लिये ये कानून शोषण का हथियार बन गये। अनेक उच्च अधिकारी भी अपने जाति हथियार का खुल कर प्रयोग करने लगे है कार्यालयों तक में एसे अधिकरी सब को दबा कर प्रयोग करने व मंत्री तक को मैनं इन कानूनां के नाम पर झूठी रिपोर्ट करते देखा है। समाज के सभी वर्गो में अच्छे व बुरे लोग होते है। ऐस वर्ग प्रधान कानून की आवश्यकता नहीं है। कुल मिलाकर अपराध और चरित्र पतन में वृद्धि होती है। शोषण करने के लिये किसी भी प्रकार के विशेष कानून की आवश्यकता नहीं ह। शोषण शोषित की मजबुरी से लाभ उठाने का ही नाम होता है। आप शोषिण की मजबुरी समाप्त करे दे तो शोषण रूक जायेगा। महिलाओं का शोषण रोकने हेतु सभी अन्य भेदकारी कानून समाप्त करके सिर्फ परिवार की परिभाषा बदलने की आवश्यकता है। परिवार को अभी न तो सौद्धांतिक मान्यता है और न ही संवैधानीक परिभाषा। उसकी वर्तमान प्रचलित परिभाषा को बदलकर सिर्फ यह लिख दें संयुक्त सम्पति और संयक्त उत्तरदायित्व के आधार पर एक साथ रहने हेतु सहमत व्यक्तियों का समूह।

इतना संशोधन मात्र महिला शोषण उत्पीडन,आदि सभो समस्याओं के विरूद्ध हाइड्रोंतन बम का काम करेगां।इसी तरह सभी प्रकार के आरक्षण श्रम मूल्य जाति शोषण के कानून आदि समाप्त कर दीजिए। सभी प्रकार के टैक्स भी खत्म कर दीजिएं सारा टेक्स सिर्फ कत्रिम उर्जा पर लगा दीजिए श्रम मूल्य बढ जायेगा कृषि आधारित रोजगार पनपेने सब प्रकार के शोषण समाप्त हो जायेगा। शोषण को जीवित रखकर शोषण के नाम पर राजनीतिक रोटी सेंकने के कारण ही शोषण जीवित है अन्यथा यदि शासन शोषण रोकने हेतु प्रयास बद कर दे और समाज को यह काम आसान हो जायेगा। आपने बहुराष्ट्रीय कंपनियों नीजिकरण उदारीकरण आदि को शोषण का आधार माना है यह सब शोषण के आधार बिल्कुल नहीं है। यह सब शोषण के परिणाम है। शोषण के आधार है श्रम मूल्य वृद्धि को रोककर रखना। यदि समाज में श्रम की मांग बढ जावे तो उसका मूल्य भी बढ जायेगा। और सम्मान भी एक षडयत्र के अन्तर्गत श्रम की मांग को कम करने की योजनाएँ बनाई जाती है साम्यवादी इन योजनाओं को बनाने का नेतृत्व करते है और पूँजीवाादी इन योजनाओं का समर्थन करते है। ये सभी बहुत लम्बे विषय है। यदि और प्रतिकियाएँ आयेगी तो मैं और अधिक स्पष्ट कर सकूँगा मैं अपने अनुसंधान के आधार पर कह सकता हूँ। कि श्रम शोषण सिर्फ साम्यवादियों का पूँजीवादियों के समर्थन से सनियोजित षडयंत्र है। जो समझते है कि ऐसा नही है वे मुझे आमंत्रित करें। मैं उनकी प्रायोजित बैठक में इस संबंध में विचार रख सकता हूँ।या यदि वे पत्र लिखें तो मैं ज्ञान तत्व में उत्तर दे सकता हूँ। बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ निजी करण उदारीकरण आदि बहुत गंभीर विषय है। अनेक मित्र तथा सहयोगी इन कामों से जूडे हुए है। सर्वोदय के लोग तथा गोविन्दाचार्य जी से जुडे ही है। मैं आप सब की भावनाओं के आधार पर इस विषय से अपने को दूर रखता हुं। विषय बहुत संवेदनशील है और भ्रम निर्माण कर सकता है। अत मैं इस विषय पर और आगे लिखना उचित नहीं समझता । फिर भी यदि भविष्य में आवश्यकता हुई तो इस विषय पर चर्चा की जा सकेगी।